5

लोककला के प्रतीक एवं अभिप्राय

प्रिय शिक्षार्थियों, पिछले पाठ में हमने लोक और आदिवासी कला की पारंपरिक तथा समकालीन पद्धतियों और सामग्रियों को जाना। इस पाठ में हम लोककला के प्रतीकों और अभिप्रायों को जानेंगे। प्रतीक किसी वस्तु, चित्र, लिखित शब्द, ध्वनि या विशिष्ट चिह्न को कहते हैं जो संबंध, सादृश्यता या परंपरा द्वारा किसी अन्य वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है। प्रतीक रूपक के बहुत नजदीक होते हैं। प्रतीक में हम उस वस्तु से कहीं अधिक और भी आगे की कल्पना करते हैं। प्रतीक चिह्न मूल वस्तु की पहचान बन जाता है। प्रतीक केवल पदार्थ नहीं होते, उनका प्रयोग किसी सूक्ष्म केंद्रीय आशय को दर्शाने के लिये किया जाता है; जैसे- कमल सृष्टि के विस्तार का प्रतीक है। अब जहाँ-जहाँ भी कमल के फूल का अंकन होगा, वहाँ-वहाँ कमल का प्रतीकार्थ यही होगा। फिर चाहे वह कविता में हो या चित्रकला में।

अभिप्राय या मूलभाव को अंग्रेज़ी में 'मोटिफ़' (Motif) कहते हैं, जो शब्द और चित्र परंपरा दोनों में प्रयुक्त होता है। अभिप्राय अलंकरण के काम आते हैं। ये चित्र-शिल्प का प्रमुख लक्षण होते हैं। अभिप्रायों को इकाई रूप में भी चित्रित किया जाता है और इनकी पुनरावृत्ति से अभिकल्प भी तैयार किये जाते हैं।

प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को समझने में मनुष्य ने अपनी कल्पना और तर्क शक्ति से जो बिम्ब, संकेत और अभिप्राय निर्मित किए, उन्हीं से प्रतीक का गठन हुआ। एक प्रतीक में अर्थ व्याप्ति बीजवत संपूर्ण पेड़ की तरह समाई होती है। प्रतीक मनुष्य की वह अभिव्यक्ति है, जिसे मनुष्य सीधे नहीं कह पाता। वह उसे सादृश्य भाव के अभिप्रायों से प्रकट करता है, तब वह संरचना प्रतीक हो जाती है। अभिप्राय के बिना प्रतीक नहीं रह पाता और बिना प्रतीक के आलंबन के अभिप्राय भी नहीं रह पाता। कहने का मतलब यह है कि चाहे कला हो या साहित्य, कभी अभिप्राय कोई प्रतीक बन जाता है और कभी पूरा प्रतीक अभिप्राय हो जाता है। दोनों एक-दूसरे के अन्योन्याश्रित हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- लोक प्रतीकों को पहचान कर सकेंगें;
- कला में लोक प्रतीकों का प्रयोग कर पाएँगे;
- लोकचित्र परंपरा में प्रचलित लोक प्रतीकों का उल्लेख कर सकेंगें;
- लोककला शैली में अभिप्रायों और लोक प्रतीकों के महत्व का वर्णन कर सकेंगे;
- लोकचित्र शैलियों के प्रमुख लोक प्रतीकों और अभिप्रायों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

लोकचित्र परंपरा में कई प्रकार के लोक अभिप्राय और प्रतीक उपयोग में आते हैं, जो चित्रित विषय को पूरी सामर्थ्य से अभिव्यक्त करते हैं। भारत की विभिन्न लोकचित्र शैलियों में कई अभिप्राय और लोक प्रतीकों का प्रयोग होता है, जिनमें बिहार की मधुबनी, ओडिशा की उड़िया पट्ट, बंगाल की पटुआ, महाराष्ट्र की चित्रकथी और आंध्रप्रदेश की कलमकारी तथा चेरियाल पटम प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त परंपरागत भित्ति और भूमि चित्रों में अभिप्राय और लोक प्रतीकों की उपस्थिति मिलती है।

- प्रतीकों के प्रकार-

1. ज्यामितिक प्रतीक

   जैसे- बिंदु, शून्य, रेखा, त्रिकोण आदि।

2. पौराणिक प्रतीक

   जैसे- स्वस्तिक, त्रिशूल, चक्र, ओम, कलश आदि।

3. प्राकृतिक प्रतीक

   जैसे- प्रकृति, सूर्य, चंद्र, तारे, पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि आदि।

4. वानस्पतिक प्रतीक

   जैसे- पेड़-पौधे, बीज, कमल, पत्ते, फूल, फल आदि।

5. जैविक प्रतीक

   जैसे- पशु-पक्षी, जीव, तोता, मयूर, कामधेनु, नाग आदि।

6. दैविक प्रतीक

   जैसे- लोक देवी-देवता।

5.1 अभिप्राय

5.1.1 पिल्ली अडगू

प्रतीक

चिह्न : पिल्ली अडगू (कलमकारी)
स्थान : श्री कालाहस्ती (आंध्रप्रदेश)
कलाकार : स्व. एम.मुनिरेड्डी
माध्यम : कपड़ा, स्याही, जल वनस्पति रंग
आकार : 3' × 4'
संकलन : आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल, म. प्र.

संक्षिप्त परिचय

आंध्रप्रदेश की कलमकारी लोकचित्र शैली में '**पिल्ली अडगू**' यानी बिल्ली के पैरों के चिह्न अलंकरण के लिये हर जगह बनाए जाते हैं। बिल्ली के पैर पवित्र माने जाते हैं और उन्हें अभिप्राय के रूप में परंपरागत चित्रों में सर्वत्र चित्रित किया जाता है। कलमकारी चित्रशैली में पिल्ली अडगू जहाँ खाली जगह को भरने का काम करते हैं, वहीं बार्डर में भी पिल्ली अडगू बनाये जाते हैं। पिल्ली अडगू का आकार जगह के अनुरूप बड़ा-छोटा हो सकता है। पिल्ली अडगू का कोई रंग सुनिश्चित् नहीं होता। आवश्यकतानुसार कलाकार किसी भी रंग से इनको बना सकता है। इस प्रतीक चिह्न या अभिप्राय का प्रयोग सभी कलमकारी चित्रकार परंपरा से करते आए हैं।

चित्र 5.1: पिल्ली अडगू (कलमकारी)

सामान्य विवरण

यह चित्र (5.1) पिल्ली अडगू कलमकारी तकनीक से बनाया गया पटचित्र है। यह चित्र आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल में प्रदर्शित है। इस चित्र में एक गिलहरी को फूलों के वृक्ष पर एक टहनी पर फल खाते हुए दर्शाया गया है। यह पूरा चित्र सजावटी शेली में प्रतीक की पुनरावृत्ति करते हुए चित्रित किया गया है। गिलहरी भूरे रंग में चित्रित की गई है, जबकि चिड़िया को पीले, लाल तथा हरे रंग से बनाया गया है। इसकी चोंच लाल रंग से बनाई गई है। चित्र में पत्ते भी पीले तथा नारंगी रंग से बनाए गए हैं।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. आंध्रप्रदेश की लोक चित्र शैली का क्या नाम है?
2. पिल्ली अडगू का क्या अर्थ है?
3. पिल्ली अडगू चित्र के कलाकार का क्या नाम है?
4. इस चित्र में चिड़िया को किस-किस रंग से बनाया गया है?

क्रियाकलाप

किसी पुस्तकालय या आर्ट गैलरी में जाकर चार ज्यामितीय तथा चार पौराणिक प्रतीकों को एकत्र कीजिए, जिन्हें पारंपरिक लोककला में प्रयुक्त किया जाता हो। एक-एक कर इन्हें चिपकाकर उनके विषय में दो-दो पंक्तियां लिखिए।

प्रतीक का चित्र	प्रतीक का वर्णन

5.2 लटपटिया सुआ (मधुबनी)

प्रतीक

चिह्न : लटपटिया सूआ (अभिप्राय) कोहबर, मधुबनी

कलाकार : महासुंदरी देवी, रांटी, मधुबनी, बिहार

माध्यम : कागज़ और लाल-काली स्याही

आकार : 8½" × 9½"

संकलन : निजी संकलन में

संक्षिप्त परिचय

मधुबनी लोकचित्र शैली में 'लटपटिया सुआ' सजावट के लिए सबसे अधिक बनाया जाता है। इसे कहीं काली स्याही के रेखांकन से और कहीं रंगों के साथ बनाया जाता है। मधुबनी में इसकी आकृति रूढ़ हो गई है, इसलिए मधुबनी के लगभग सभी चित्रों के अलंकरण में प्राय: इसकी आकृति एक जैसी मिलती है। सुआ जहाँ धन-धान्य तथा समृद्धि का प्रतीक है, वहीं वह प्रेम का भी प्रतीक माना जाता है।

चित्र 5.2: लटपटिया सूआ (मधुबनी)

सामान्य विवरण

लटपटिया सुआ प्रेम से भरे हुए तोते के जोड़े के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह नवदाम्पत्य जीवन के अमित प्रेम और सुख-समृद्धि का प्रतीक होता है। सुए (तोते) को मधुबनी चित्रकला में 'कोहबर' से लिया गया है, जहाँ से मधुबनी लोकचित्र शैली का उद्‌भव और विकास हुआ है।

यह चित्र (5.2) कागज़ पर बना हुआ मधुबनी शैली का चित्र है। इस चित्र को विश्वप्रसिद्ध मधुबनी कलाकार महासुंदरी देवी ने बनाया है जो उनके निजी संकलन में मधुबनी, बिहार में है। यह चित्र काली लाल स्याही से बनाया गया है। इस चित्र के मध्य में एक वृक्ष बनाया गया है। इस वृक्ष के दोनों तरफ़ एक तोते का जोड़ा बैठा बनाया गया है। तोता धन-धान्य समृद्धि एवं प्रेम का प्रतीक माना गया है जो मधुबनी शैली का एक लोकप्रिय विषय है। वृक्ष की टहनियाँ तथा पत्ते अलंकृत शैली में कलम की निब से बनाए गये हैं। तोते की चोंच में लाल रंग भरा हुआ है। इस चित्र का बार्डर काली रेखाओं के द्वारा बनाया गया है तथा लाल रंग की पट्टी भी बीच में बनाई गई है।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. लटपटिया सूआ किस पक्षी का प्रतीक नाम है?
2. मधुबनी लोकचित्र शैली किस राज्य की चित्र शैली है?
3. लटपटिया सूआ किन-किन शुभ कामनाओं को सूचित करता है?
4. मधुबनी शैली के चित्र कैसे बनाए जाते हैं?

5.3 धाड़ी या धारी उडिया पट्ट

प्रतीक

चिह्न : धाड़ी, उडिया पट्ट

कलाकार : जगन्नाथ महापात्र, रघुराजपुर, ओडिशा

माध्यम : पट्ट, जल और मिट्टी रंग

आकार : 18" × 12"

संकलन : आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल

संक्षिप्त परिचय

उड़िया पट्ट लोकचित्र शैली में फलक के चित्रों के चारों ओर '**धाड़ी या धारी**' (बार्डर) बनाने की परंपरा है। इसमें कई तरह के फूल, पत्तों और फलों के अभिप्राय बनाकर अलंकृत करने की प्रथा है, जिससे चित्र की सुंदरता और अर्थवत्ता में वृद्धि होती है। इसमें भाँति-भाँति के कई बार्डर्स बनाए जाते हैं; जिनमें पत्र केरा, अलखपंख, पत्रझाड़ा, फूलकेरा, फूलमोड़ा, पंचपत्री, पत्रकोसा, कुंभापाटा, अबकसिया, लिकोरी आदि प्रमुख हैं।

सामान्य विवरण

उडिया पट्टचित्र शैली में जितना महत्व मुख्य विषय चित्रित करने का है, उतना ही धाड़ी या बार्डर को सजाने का है। उडिया पट्टचित्र का बार्डर भी कोई दक्ष कलाकार ही बना सकता है।

चित्र 5.3: धाड़ी, पट्ट चित्र

पत्र केराधाड़ी में पत्तों की झालर होती है। झालर के बीच-बीच में फूल होते हैं। अलखपंख में धाड़ी में पक्षियों के पंखों विशेषकर मयूरपंख की झालर होती है और बीच में फूल होते हैं। पत्र झड़ाधाड़ी में पत्ते नीचे उतरते यानी लटकते दिखाये जाते हैं। फूलकेरा में फूलों की झालर होती है। फूलमोड़ा में फूल की बेल अधिक मुड़ी हुई होती है। पत्र कुंभधाड़ी में पत्ते कलश के आकार के चित्रित किये जाते हैं। पंचपत्री में पाँच प्रकार के पत्तों को समूहरूप में चित्रित किया जाता है। पंचकोसा पत्ती की मिश्रित पाँच संख्या बेल के रूप में बनाई जाती है, जिसके मध्य में फूल बनाया जाता है। कुंभ पाटाधाड़ी में पत्तों को मटकी या कलशनुमा बनाया जाता है। जिसे देखने पर कुंभ या कलश का आभास पूरी धाड़ी में होता है। सभी प्रकार की धाड़ियाँ अत्यंत सुंदर होती हैं।

पाठगत प्रश्न 5.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. धाड़ी या धारी पट्टचित्रण किस राज्य की लोकचित्र शैली है?

   (i) बिहार (ii) राजस्थान

   (iii) ओडिशा (iv) कर्नाटक

2. धारी पट्टचित्रण किस कलाकार के द्वारा बनाया गया चित्र है।

   (i) जगन्नाथ मिश्र (ii) दलाल सिंह

   (iii) जगन्नाथ महापात्र (iv) मनशा देवी

क्रियाकलाप

एक ए-4 कागज़ पर धाड़ी पट्टचित्र जल रंगों से बनाइए। हाशिए पर पक्षियों के पंख और साथ में फूल अभिप्राय भी बनाइए।

5.4 सूर्य

लोक प्रतीक

लोक प्रतीक : सूर्य

कलाकार : महासुंदरी देवी, रांटी, मधुबनी, बिहार

माध्यम : कागज़ और रंग

आकार : 3½" × 3½"

संकलन : निजी

संक्षिप्त परिचय

प्रिय शिक्षार्थियों! आप जानते हैं कि सूर्य एक प्राकृतिक प्रतीक हैं। लोक सूर्य से ही आलोकित होता है। सूर्य के कारण दिन-रात होते हैं। पृथ्वी की गतिविधि के केंद्र में सूर्य ही है। सृष्टि में सूर्य सबसे तेजस्वी नक्षत्र है। यह सभी ग्रह-नक्षत्रों का स्वामी है। इसलिए सूर्य प्रकाश, उर्जा, गति और समय का प्रतीक है। रायगढ़ के सिंघनपुर प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में सात किरणों वाले सूर्य की आकृति का अंकन प्रतीक पूजन का आदिम प्रामाणिक दस्तावेज है। पारंपरिक लोक चित्रकला में सूर्य का अंकन प्राय: गोलाकार रूप में किरणयुक्त किया जाता है, जो अभिप्राय और लोकप्रतीक दोनों रूपाकारों में प्रयुक्त होता है। आदिम मानव ने सूर्य को प्रकृति के आदि देवताओं में प्रतिष्ठित किया है।

सामान्य विवरण

लोककला में सूर्य का चित्रांकन अत्यंत सरलता से किया जाता है। गोल आकृति या परिधि-वृत्त बनाकर उसके सब ओर छोटी-बड़ी खड़ी या आड़ी-टेढ़ी रेखाएँ खींचकर सूर्य प्रतीक को अभिव्यक्त किया जा सकता है। इसका केवल रेखांकन कर और रंग भरकर भी सूर्य को दिखाया जा सकता है। सूर्य का प्रयोग अभिप्राय और लोक प्रतीक दोनों रूपों में किया जा सकता है। सूर्य को भूमि, भित्ति, मंदिर, भवन, चित्र, शिल्प के अलंकरण, साज-सज्जा आदि में अभिप्राय के रूप में प्रमुख स्थान दिया जाता है। लोककलाओं में सूर्य का अंकन अनिवार्य होता है, वह शाश्वतता का भी प्रतीक है।

चित्र 5.4: सूर्य प्रतीक

पाठगत प्रश्न 5.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. ..... लोकचित्रकला में सूर्य का अंकन गोलाकार रूप में किया जाता है।
2. लोककला में ..... चित्रांकन अत्यंत सरलता से किया जाता है।
3. सूर्य एक ..... प्रतीक है।
4. दिए गए लोक प्रतीक सूर्य का कलाकार ..... है।
5. लोककला में सूर्य ..... का भी प्रतीक है।

5.5 कमल

लोक प्रतीक

लोक प्रतीक : कमल
कलाकार : अज्ञात
माध्यम : कैनवास और रंग
आकार : 8' × 8'
संकलन : इंटरनेट से

संक्षिप्त परिचय

कमल सृष्टि का पहला लोक प्रतीक है, जो पृथ्वी की उत्पत्ति और विस्तार का कारक तत्त्व है। लोकचित्र परंपरा में कमल के अनेक रूपाकार मिलते हैं। कमल के विभिन्न अभिप्रायों के अलंकरण के रूप में सार्थक प्रयोग परंपरा से किए गए हैं। भूमि, भित्ति, मंदिर, भवन की बाह्य और आंतरिक सज्जा में कमल का प्रतीकात्मक अंकन लोक की स्थापत्य कला में बड़ी महत्ता के साथ किया जाता है। लोक के माँडणों और भित्तिचित्रों के अलंकरण में भी कमल का उपयोग कल्पनाशील तरीके से हुआ है।

चित्र 5.5: कमल प्रतीक

सामान्य विवरण

कमल के विभिन्न रूपों यथा चर्तुदल, षट्दल, अष्टदल, षोडषदल वाले कमल का चित्रण शैलचित्रों, लोकचित्र शैलियों और लोककला में अवश्य मिलता है। कमल के प्रत्येक अंग को प्रतीकात्मक माना गया है। कमल की नाल को ब्रह्मनाल कहा गया है। पानी में तैरते कमल के पत्ते को जीवन का प्रतीक माना गया है। कमल की पंखुडियाँ जीवन और सृष्टि के विस्तार का प्रतीक हैं। कमल पुष्प के मध्य का हिस्सा ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। लोक की वाचिक परंपरा और रचित साहित्य में कमल की अनेक उपमाएँ प्रतीक रूप में गढ़ी गई हैं। लोककला में कमल का अंकन अत्यंत सहज और सरल है। इसलिए कमल एक लोकप्रिय प्रतीक है।

पाठगत प्रश्न 5.5

सही उत्तर का मिलान कीजिए :

1.	लोक प्रतीक	:	8' × 8'
2.	कलाकार	:	केनवास और रंग
3.	माध्यम	:	अज्ञात
4.	आकार	:	कमल
5.	रूप	:	चर्तुदल

5.6 स्वस्तिक

लोक प्रतीक

लोक प्रतीक : स्वस्तिक
कलाकार : अज्ञात
माध्यम : कागज़ और रंग
आकार : 4½ × 4½
संकलन : मोटिफ्स

संक्षिप्त परिचय

स्वस्तिक संपूर्ण भारतीय संस्कृति का मांगलिक प्रतीक और चिह्न है; जिसमें धर्म, दर्शन, इतिहास, कला-साहित्य, संस्कृति सभी कुछ समाया है। संस्कृति का ऐसा और इतना सारगर्भित, लोकव्यापी, संक्षिप्त, सरल, सुंदर और आकर्षक प्रतीक चिह्न विश्व में शायद ही कोई दूसरा हो। स्वस्तिक की प्रथम उपस्थिति प्रागैतिहासिक चित्रों में कई जगह मिलती है। भारत में स्वस्तिक के अंकन की परंपरा विभिन्न कला माध्यमों में रही है। लोक में यही स्वस्तिक साथिया या सातिया और चौक के रूप में प्रचलित रहा है। लोकचित्र कला में चाहे माँडणा हो या भित्तिचित्र अथवा कोई और अलंकरण हो, उसमें स्वस्तिक का अंकन सर्वाधिक पाया जाता है। स्वस्तिक लोक मंगल का प्रतीक है। स्त्रियाँ उसे हर व्रत-उपवास अनुष्ठान, मांगलिक अवसरों पर बनाना नहीं भूलती। इसे कई जगह चावल और जवार के आटे, हल्दी-कुंकुम और रंग रेखाओं से बनाया जाता है।

चित्र 5.7: स्वस्तिक-प्रतीक

सामान्य विवरण

स्वस्तिक आड़ी-खड़ी रेखाओं के मिलने से बनता है। जिस जगह आड़ी-खड़ी रेखाएँ एक केंद्र पर मिलती हैं, वह स्वस्तिक का मूल बिंदु होता है। आड़ी-खड़ी रेखाओं पर आड़ी भुजाएँ विस्तार

का प्रतीक है। स्वस्तिक बनाना अत्यंत सरल है। इसलिए लोक में इसकी प्रतिष्ठा व्यापक है। लोक का कोई भी छोटा सा भी आनुष्ठानिक कार्य बिना स्वस्तिक पूजा के प्रारंभ नहीं होता। लोकचित्रों में स्वस्तिक अभिप्राय और प्रतीक दोनों रूपों में प्रचलित है। लोक अलंकरण का प्राण है स्वस्तिक। चाहे घर हो, मंदिर हो या और कोई स्थापत्य हो, स्वस्तिक का अंकन अवश्य होता है। लोक चित्रकला हो या मूर्तिकला, सबमें किसी-न-किसी तरह प्रतीक रूप में स्वस्तिक उपस्थित होता है।

पाठगत प्रश्न 5.6

रिक्त स्थानों का पूर्ति कीजिए :

1. स्वस्तिक संपूर्ण रूप से ..... और भारतीय संस्कृति का चिह्न है।
2. ..... की प्रथम उपस्थिति प्रागैतिहासिक चित्रों में कई जगह मिलती है।
3. स्वस्तिक का अंकन सर्वाधिक ..... तथा ..... में पाया जाता है।
4. स्वस्तिक लोक ..... का प्रतीक है।
5. स्त्रियाँ स्वस्तिक चिह्न ..... अनुष्ठान, ... अवसरों पर बनाना नहीं भूलतीं।

आपने क्या सीखा

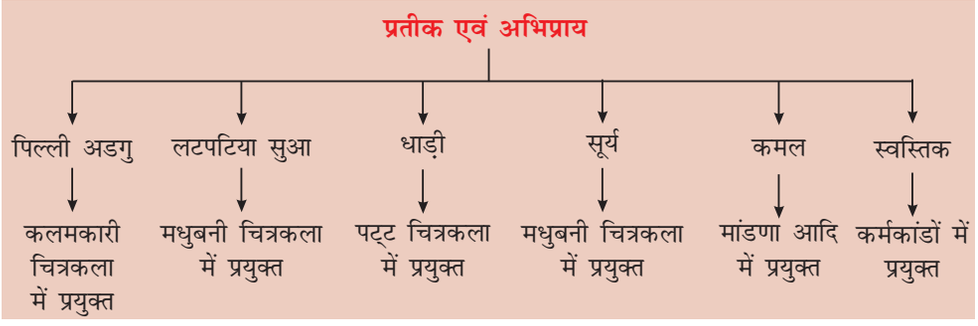

सीखने के प्रतिफल

- विभिन्न प्रकार के भूमि और भित्तिचित्रों की रचना के लिये अभिप्रायों का प्रयोग करते हैं।
- अपने घरों, मंदिरों अथवा भवनों की सज्जा के लिये प्रतीक बनाते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. भारतीय कला संस्कृति के प्रमुख तीन लोक प्रतीकों को परिभाषित कीजिए।
2. भारतीय चित्रकला परंपरा में रंग लोक प्रतीकों को विस्तार से समझाइए।
3. ज्यामितिक लोक प्रतीकों की चित्रकला में उपस्थिति और उनके अर्थ आशय लिखिए।
4. भारतीय चित्रकला में अभिप्राय और प्रतीक के महत्व को प्रतिपादित कीजिए।
5. लोक प्रतीकों का प्रयोग चित्रकला में कितना औचित्यपूर्ण है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. पिल्ली अडगु
2. बिल्ली के पैरों के चिह्न
3. एम. मुनिरेड्डी
4. पीले, लाल तथा हरे रंग से

5.2

1. तोते
2. बिहार
3. नवदांपत्य जीवन के अमित प्रेम और सुख समृद्धि का प्रतीक
4. काली, लाल स्याही से बनाया जाता है।

5.3

1. (ii) ओडिशा
2. (iii) जगन्नाथ महापात्र

5.4

1. पारंपरिक
2. सूर्य
3. प्राकृतिक
4. महासुंदरी देवी
5. शाश्वत

5.5

1. लोकप्रतीक : कमल

2. कलाकार : अज्ञात

3. माध्यम : केनवास और रंग

4. आकार : 8' × 8'

5. रूप : चर्तुदल

5.6

1. मांगलिक
2. स्वस्तिक
3. मांडण, भित्तिचित्र
4. मंगल
5. व्रत-उपवास, मांगलिक